



दिशा

2022



प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची - 834002

दिशा परिवार



श्री राज कुमार अग्रवाल
प्रधान महालेखाकार



श्री अरुण मिंज
वरीय उप महालेखाकार
(प्रशासन, जी.ई. एवं पेंशन)



श्री वी.पी. सुधीर
उप महालेखाकार (तदर्थ)
(लेखा, कार्य एवं वन)



श्री अर्जुन चौधरी
वरीय लेखा अधिकारी
(प्रधान संपादक)



श्री मनोज कुमार
वरीय लेखा अधिकारी



श्री अशोक सिंह
सहायक लेखा अधिकारी



श्री उमेश कुमार ओझा
वरीय लेखाकार

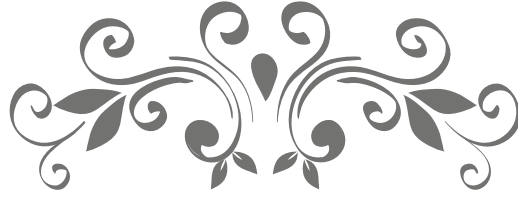


डॉ. शिप्रा शालिनी आईद
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

दिशा

स्वलेखन से अलंकृत, प्रतिभाओं का संस्मरण,
भावनाओं अनुभूतियों का श्रृंखलाबद्ध अनुकरण,
भारतीय संस्कृति का गौरवान्वित विवरण
इन्हीं से आलोकित एवं सुशोभित है
“दिशा” 2022 का संस्करण

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय, राँची-834002



- ❖ टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।
- ❖ मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
- ❖ शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
- ❖ अशुद्धियों से घबराएं नहीं।
- ❖ अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।
- ❖ हिन्दी पढ़ें, हिन्दी लिखें, हिन्दी का सम्मान करें।
- ❖ हिन्दी में काम बहुत ही आसान, समझना आसान तथा समझाना आसान।



दिशा परिवार

संरक्षक
श्री राजकुमार अग्रवाल
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), झारखण्ड, राँची

परामर्श दातृ समिति

श्री अरूण मिंज
वरीय उप महालेखाकार
(प्रशासन, जी.ई. एवं पेंशन)

✽

श्री वी.पी. सुधीर
उप महालेखाकार (तदर्थ)
(लेखा, कार्य एवं वन)

प्रधान संपादक

श्री अर्जुन चौधरी
वरीय लेखा अधिकारी



संपादक मंडल

श्री मनोज कुमार
वरीय लेखा अधिकारी

श्री अशोक सिंह
सहायक लेखा अधिकारी

श्री उमेश कुमार ओझा
वरीय लेखाकार

संपादकीय सहायक

डॉ. शिप्रा शालिनी आईन्द
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

स्वत्वाधिकार :
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), झारखण्ड, राँची



प्रकाशन :
दिशा (हिन्दी वार्षिक पत्रिका)



प्रकाशक :
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
झारखण्ड, राँची



अंक :
'वार्षिक 2022'



मूल्य :
“राजभाषा के प्रति निष्ठा”



मुद्रण :
नेक्स्ट प्रिन्ट, राँची



आवरण :
कार्यालय भवन

पत्रिका में छपी रचनाओं की मौलिकता का उत्तरदायित्व रचनाकारों का है।
रचनाकारों के विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संरक्षक की कलम से....

९९



मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय की वार्षिक पत्रिका “दिशा” आपके हाथों में है, जो इस कार्यालय परिवार के सामूहिक अथक प्रयास का परिचायक है; जिसमें खासकर कार्यालय के कर्मियों तथा उनके पारिवारिक सदस्यों की भावभीनी तार्किक अभिव्यक्ति तथा अंतः स्फुरित उद्गारों को पिरोया गया है।

अभिव्यक्ति, मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है और आत्म अभिव्यक्ति के लिए मातृभाषा से बेहतर और कोई माध्यम नहीं हो सकता। मुझे आशा है कि पत्रिका में जो सुरुचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक रचनाएँ शामिल की गयी है, वे अपनी अभिव्यक्ति द्वारा राजभाषा हिंदी के सतत् उन्नयन एवं प्रचार-प्रसार के साथ निर्धारित लक्ष्यों की प्रतिपूर्ति में भी अपनी भूमिका निभाती रहेगी।

“दिशा” पत्रिका में अपना सक्रिय योगदान करने के लिए समस्त रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मैं अपनी ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूँ तथा मुझे उम्मीद है कि यह पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति करती रहेगी।

(राज कुमार अग्रवाल)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
झारखण्ड, राँची

९९

संपादकीय.....



कार्यालय की गृह पत्रिका “दिशा”- 2022 का नवीनतम अंक आपके समक्ष रखते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। किसी भी विभागीय पत्रिका का परम्परागत प्रकाशन गर्व तथा गौरव की बात होती है। प्रस्तुत अंक में भी गुणवत्तायुक्त पत्रिका प्रकाशित करने की अपनी परंपरा को बढ़ाने की कोशिश हमने की है।

सफलतापूर्वक पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं पत्रिका से जुड़े सभी लेखकों, रचनाकारों तथा संपादक सहयोगियों के साथ-साथ पाठकों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

आप सभी के विचारों तथा सम्मतियों की प्रतीक्षा में।

अर्जुन चौधरी
प्रधान संपादक

अनुक्रमणिका

क्रमांक	रचना का नाम	प्रकार	पृष्ठ	रचनाकार, पदनाम (सर्वश्री)
1.	ये रात भीगी-भीगी	लेख	7	श्री प्रतीक जैन, स.ले.अ.
2.	बातें	कविता	8	श्री कृष्ण लाल, लेखाकार
3.	मनोदशा	कविता	9	श्री पुरुषोत्तम दास प्र.ले.अ.ग्रेड- II, मधुपुर
4.	मित्रता एवं पैसों की बचत	लेख	10-11	श्रीमती गीतांजलि कुमारी, लेखाकार
5.	ई-ऑफिस	कविता	12	डा. शिप्रा शालिनी आईन्द, क.हि.अ.
6.	सही दिशा का निर्धारण	लेख	13-14	श्री उमेश कुमार ओझा, व. लेखाकार
7.	स्वामोश मन	कविता	15	सुश्री स्वराज श्वेता C/o. श्रीमती गीतांजलि कुमारी लेखाकार
8.	संसार	कविता	16	श्री प्रखर जैन C/o. प्रतीक जैन, स.ले.अ.
9.	यथार्थ	कविता	17	डॉ. शिप्रा शालिनी आईन्द क.हि.अ.
10.	समय के टुकड़े	कविता	18-19	श्री पुरुषोत्तम दास प्र.ले.अ. ग्रेड- II, मधुपुर
11.	नारी तु महान	कविता	20	श्रीमती गीतांजलि कुमारी, लेखाकार
12.	मित्रता	लेख	21	श्री प्रतीक जैन, स.ले.अ.
13.	आत्म युद्ध	कविता	22	श्री अमित कुमार क.हि.अ.
14.	कार्यालय की विभिन्न गतिविधियाँ		23	हिन्दी कक्ष
15.	अंडमान भ्रमण	यात्रा वृत्तांत	24-28	श्री एस. आर. कर्मकार से.नि.व.ले.अ.
16.	जीवन एक युद्ध	कविता	29	श्री अमित कुमार, क.हि.अ.
17.	घर के तलाश में जिंदगी	लेख	30-31	श्री अमित कुमार “पुष्पम” C/o. श्री अमित कुमार, क.हि.अ.
18.	संयुक्त परिवार के साझी कुटुंब	लेख	32-33	श्री आयुष कुमार C/o. श्री अमित कुमार, क.हि.अ.
19.	एलोपैथ बनाम आयुर्वेद	लेख	34	श्री हिमांशु पाण्डेय सहायक लेखा अधिकारी

ये रात भींगी-भींगी



प्रतीक जैन
स.ले.अ.

मन्ना डे के कंठ से फूटा यह बैरागी स्वर श्रोता के अंतर्मन को बेधते हुए कहीं गहरे धंस जाता है, सन् 56 की फिल्म 'चोरी-चोरी' का यह गीत दशकों बाद भी संगीत रसिकों के कर्ण पटल पर स्थायी आश्रय पाता है। हिंदी सिनेमा की बहुचर्चित राज और नरगिस की जोड़ी का श्वेत-श्याम छायांकन शैलेंद्र के बोलों को स्वर मिला, लता और मन्ना का तब कहीं जाकर यह दो गाना तैयार हुआ है। इसमें पुरुष और स्त्री के स्वरों में एक विभेद है, जो कभी-कभी प्रेमयुक्त मिलन और विरह के मेल का दर्शन कराता है। सुनकर ऐसा लगता है, मानों मन्ना के स्वर रूप हिमालय से कोई मंदाकिनी लता के स्वरों के रूप में निर्बाध कल-कल करती बही चली आती हो। रात के अंधेरे को चीरती हुई लता की आवाज, तिस पर दुविधाग्रस्त एकांत के जैसी मन्ना की आवाज गाने में नायक और नायिका मानो खुद से बतिया रहे हों और कहीं शून्य में उत्तर की तलाश जारी हो। कहीं कुछ अधूरा सा है, मन में कोई गांठ कहीं पर हो, प्रेम में वह उजला उल्लास अभी भी बाकी है।

इठलाती हवा, नीलम सा गगन, कलियों पे ये बेहोशी की नमी ऐसे में भी क्यूं बैचैन है, दिल! जीवन में न जाने क्या है कमी।

इस बैरागी मन में ही ऐसी टीस उठ सकती है, जबकि सबकुछ मिलने पर भी अंदर एक खालीपन है। वातावरण रात्रि प्रेम में लिपटा है, फिर भी कुछ अप्राप्य को पाने की जिजीविषा है। बार-बार नायक नायिका प्रेम के उस सौम्य, भाव, प्रणव, पहलू को छूकर मानो पुनः आकिंचन्य वृत्ति की ओर लौट जाते हैं और यह पूरी स्थिति को दिखलाने के लिए राज की मायूस आँखें और नरगिस के लरजते होंठ काफी हैं। इस गीत का फिल्मांकन जितना सरल है, भावार्थ उतना ही जटिल। अपनी शुरुआत से अंत तक का यह सफर राग और वैराग्य की लुका-छिपी के साथ होता है। प्रेम के साथ नैराश्य का इतना अद्भुत तालमेल शायद ही किसी दूसरे गीत में देखने को मिले। यह कालजयी गीत जितनी बार भी सुना जाय, नया ही लगता है, हमारी सोच भी कभी टहलती हुई उस जगह पर पहुंचती है जहाँ सुनाई पड़ता है।

“जो दिन के उजाले में न मिला, दिल दूँहें ऐसे सपने को”



मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ, पर मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।
: आचार्य विनोबा भावे

बातें



कृष्ण लाल
लेखाकार

कुछ बातें बस बातें होती हैं,
न कोई अर्थ, न कोई मकसद।
कुछ बातें वर्षों तक रहती हैं,
समय के साथ पकती,
पक कर जीवन हो जाती हैं।
कुछ बातें छँटती जाती हैं,
समय के अपरदन से घिस कर,
यादों से मिट जाती हैं।
तुम, हम बाकी सब,
किसमें कितना रह जाएंगे,
या कि धूमिल पड़ जायेंगे।
रुक कर, झाँक कर, देखेंगे,
क्या बातें सचमुच बस बातें होती हैं।।



हमारी देवनागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है।
: राहुल सांकृत्यायन

मनोदशा



पुरुषोत्तम दास
प्र.ले.अ. ग्रेड - II

घड़ी भर पहले जूझते बच्चे, खेल में वापस मगन थे,
स्नेह बंधन में बंध चुके थे, अभी जो गुत्थम गुत्था थे।
खिलौने जो धुरी में थे विवाद के, हाशिये पर थे,
मतभेद छोड़ बच्चे, अबकी घरोंदो में जुटे पड़े थे।

जुझने पर भी बच्चों में दूरी कहाँ होती है,
लड़ाई भी तो उनकी पकड़म पकड़ाई होती है।
लेकिन प्रौढ़ दूरी, शरद रात्रि सी क्यों होती है,
मन को अवसादों से सिंचती चली जाती है।

अभिमान बड़ों से अविच्छिन्न कैसे हो जाता है,
मानव मन का अंतर्द्वंद अलग क्यों करता है।
इनमें मिलों सयाने लगते हैं टूट कर जूटते बच्चे,
खिलौनों के लिए हाथापाई करते पर शीतलता देते।

व्यस्त सम्मुख से असुरक्षा में क्यों बहता है,
और जब कोई परिधि फैलने को होती है।
तभी हमारी तृष्णा क्यों आकार लेती है,
टकराने को आतुर रहती है क्या देकर जाती है।



हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।
: सुमित्रानंदन पंत

मित्रता एवं पैसों की बचत



गीतांजलि कुमारी
लेखाकार

सुमन और कुसुम एक ही विद्यालय में पढ़ती थी। वे दोनों बहुत अच्छी दोस्त थी। एक ही कक्षा में पढ़ने के कारण, वे दोनों हमेशा एक साथ रहती थीं। एक साथ बैठती, एक साथ खेलती थीं। यहाँ तक की एक साथ संगीत एवं नृत्य में भी समान रुचि रखती थी। विद्यालय में हर कोई इनके दोस्ती को बहुत सराहता था।

सुमन एक संपन्न परिवार से संबंध रखती थी। उसके पिता श्री राहुल वर्मा एक सफल बिजनेस मैन थे और शहर के जाने-माने शीर्ष अमीरों में से एक थे। वहीं कुसुम के पिता श्री राकेश शर्मा एक दर्जी थे। दिनभर लोगों के कपड़े सिलकर अपना और अपने परिवार का पालन पोषण करते थे। कुसुम तीन भाई-बहनों में सबसे बड़ी थी। कुसुम एवं सुमन, दोनों की पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति में काफी अंतर था, फिर भी दोनों की दोस्ती पक्की थी।

एक दिन उनकी शिक्षिका शीला जोशी ने कक्षा के दौरान सब बच्चों को बताया कि 'बाल-दिवस के मौके पर विद्यालय उनके लिए एक पिकनिक आयोजित कर रहा है। इस पिकनिक के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को 500 ₹. देना है। पिकनिक की बात सुनकर सभी बच्चे काफी खुश एवं उत्साहित थे। उस दिन कक्षा खत्म होने के बाद सभी अपने-अपने घर गये। सब बच्चों ने पिकनिक की बात अपने-अपने माता-पिता को बताया। कुसुम ने भी अपने पिता को पिकनिक एवं उसके खर्चे की बात बतायी। पैसों की कमी के कारण राकेश ने कुसुम को इस पिकनिक में जाने से मना कर दिया। वह बहुत उदास हो गयी सब बच्चों की तरह वह भी इस पिकनिक पर जाने के लिए बहुत उत्साहित थी। परन्तु वह नहीं जा पायेगी, इस बात को लेकर वह बहुत दुखी हो गयी।

अगले दिन सभी बच्चों ने वर्ग शिक्षिका को पैसे दे दिये। सुमन ने भी अपना पैसा जमा करा दिया। कुसुम उस दिन सुबह से चुपचाप कोने में बैठी थी। कुसुम को उदास देखकर, सुमन ने उसका कारण पूछा, परंतु कुसुम कुछ नहीं बता रही थी। तभी दोपहर की भोजन की घंटी बजी। दोनों दोस्त कक्षा से बाहर आयी और अपना-अपना खाना निकाला, लेकिन अभी भी कुसुम बहुत चुपचाप थी। सुमन के बहुत पूछने पर पैसों की वजह से पिकनिक पर नहीं जाने की बात, कुसुम ने अपने दोस्त को बतायी। भोजन खत्म करने के बाद दोनों एक साथ खेलती थी, परंतु आज कुसुम खेल न सकी। पूरा दिन वह उदास रही। अगले दिन सुमन ने कुसुम के बदले पैसे शिक्षिका को दिया। सुमन प्रत्येक दिन कुछ पैसे अपने छोटे-से 'पिगी बैंक' में जमा करती थी। इस प्रकार उसके पास काफी जमा हो गये थे। उसे बहुत खुशी हुई कि उसके जमा किए पैसे उसकी दोस्त के काम आ गये।

जब वर्ग शिक्षिका को यह बात पता चली तो, वह बहुत खुश हो गयी। उसने सुमन की दोस्ती एवं इस कार्य की सबके सामने सराहना की। उसने सभी बच्चों को पैसा बचत करने का पाठ पढ़ाया और साथ ही यह भी बताया कि जरूरत पड़ने पर दोस्तों की सहायता करनी चाहिए। सुमन के इस कार्य से कुसुम की आँखे आसुँओं से भर गयी। वह सुमन के गले लगकर रोने लगी।

पिकनिक के दिन सभी बच्चे बहुत खुश थे। सब ने खूब मस्ती की। उनकी कक्षा का यह पिकनिक उनके लिए यादगार पल था।



हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।
: कमलापति त्रिपाठी



डॉ. शिप्रा शालिनी आईन्द
क.हि.अ.

ई-ऑफिस

समय बड़ा बलवान,
कहते हम इंसान।
क्या सही क्या गलत,
होती है इसकी पहचान॥

सबका वक्त बदलता है,
आज मेरी बारी आई है
बैठे-बैठे थक चुकी थी,
अब तैयारी संग आई हूँ॥

अच्छी-बुरी लिखावटों से,
अब निजात पाऊँगी।
टेबल-टेबल घूमने अब,
नहीं जा पाऊँगी॥

नए रूप में, नए रंग में,
रूप निखार के आई हूँ।
सब के संगणक में,
अब ई-फाइल कहलाई हूँ।

कार्य सभी पारदर्शी होंगे,
लागत की होगी बहुत बचत।
पेड़ों के अब जान में जान आएगी,
बैठे-बैठे बटन दबाने भर से,
सबकी मेहनत रंग लाएगी।

कम होगी कागज की बर्बादी,
अब ई-फाईल में ही कामकाज है।
मिनटों में अब अनुमोदित होगी,
भविष्य में ई-ऑफिस का ही राज है।

डिजिटलाइजेशन की है कहानी,
जिम्मेदारी के संग निगरानी।
यही है कहानी,
मेरी अपनी जुबानी॥



राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।
: महात्मा गांधी

हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह की झलकियाँ



हिन्दी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह की झलकियाँ



सही दिशा का निर्धारण



उमेश कुमार ओझा
वरीय लेखकार

“सही दिशा का निर्धारण” शीर्षक के माध्यम से एक छोटे से सुझाव को इस पत्रिका में प्रस्तुत की जा रही है, जिसका मुख्य ध्येय आज के युवा पीढ़ी को इसके माध्यम से यह संदेश देने की कोशिश की गई है कि वह अपने जीवन में लक्ष्य को पाने के लिए सही दिशा का वरण करें तथा सही दिशा अपनाये।

जीवन एक लंबी यात्रा है और जब हम सामान्य यात्रा पर जाते हैं तो जाने के पूर्व आवश्यक जानकारी प्राप्त करके योजनाबद्ध तरीके से यात्रा करते हैं। लेकिन जब लक्ष्य की बात आती है अर्थात् हमें जीवन की लंबी यात्रा पर जाने की बात आती है तो हमें जाने के पूर्व कितनी तैयारी करनी चाहिए या योजनाबद्ध कार्यक्रम बनाना चाहिए।

यात्रा पर जाने से पूर्व हम मार्ग और गंतव्य के संबंध में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं, जिसमें मार्ग एवं गंतव्य स्थान पर पहुँचने में हमें भटकना न पड़े जो लोग ऐसा नहीं करते, उन्हें गुमराह होने की/भटकने की संभावना अधिक रहती है।

हमारा समाज ऐसे युवकों एवं युवतियों से भरा पड़ा है जिनके सामने कोई निश्चित उद्देश्य नहीं है, पूछने पर अधिकांश छात्र-छात्राओं का एक ही उत्तर होता है- पहले बी.ए. या एम.ए. पास कर लें, तब सोचेंगे-क्या करना है ? हमारे यहाँ अधिकांश युवक एवं युवतियाँ इसलिए महाविद्यालय में हैं, क्योंकि महाविद्यालय में पढ़ने का रिवाज है, महाविद्यालय उनके लिए नौकरी अथवा शादी रूपी ट्रेन के लिए वेटिंग रूम के समान होते हैं। वे कौन-कौन सा विषय लें, उन्हें इसमें भी कोई रुचि नहीं रहती है ?

जो मिल जाए वही ठीक है। कला, विज्ञान, वाणिज्य आदि किसी भी संकाय में प्रवेश मिल जाना चाहिए, उन्हें तो केवल विश्वविद्यालय की डिग्री चाहिए, यही कारण है कि हमारे

अनेकानेक शिक्षित युवक-युवतियाँ, भटकाव की स्थिति में दिखाई देते हैं। वे वही काम कर लेंगे जो उनको मिल जायेगा। काम मिलने में उन्हें कठिनाई इस कारण होती है कि किसी भी विषय का उन्हें पूर्ण ज्ञान नहीं होता है, परिणामस्वरूप हमारा समाज दिशाहीन युवापीढ़ी के लिए भूल-भुलैया बन गया है। यदि कोई व्यक्ति उनकी सहायता करना चाहता है तो भी वह असमर्थता का अनुभव करता है ज्ञान नहीं है अर्थात् जिन विद्यार्थियों के सामने कोई लक्ष्य नहीं होता वे इधर-उधर भटकते रह जाते हैं या उन्हें जो कुछ मिल जाता है उसी से संतोष कर लेना पड़ता है। उन्नति, प्रगति एवं विकास के प्रति उनके मन में किसी प्रकार का कोई उत्साह नहीं रहता है। दिशाहीनता की स्थिति उनकी दशा को संतोषप्रद नहीं बना पाती है।

हमें सोचना चाहिए कि हम अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करते हैं, अतएव अपनी प्रतिकूल अथवा असंतोष जनक दशा के लिए भाग्य या भगवान को दोष न देकर, हमें आत्म निरीक्षण करते हुए अपनी भूलों को स्वीकार करना चाहिए।

ट्रेन में बिना टिकट यात्रा करना और टिकट लेकर गलत ट्रेन में बैठ जाना- दोनों ही समान परिणाम देते हैं। रेलवे की नजर में दोनों ही श्रेणियों के यात्री अपराधी माने जाते हैं। हम योजना बनाये और अपने साधन, अपनी सामर्थ्य देखकर योजना बनाये और जीवन पथ पर अग्रसर हों। सही काम के लिए कभी देर नहीं होता है, दिशा ठीक होगी, तो दशा अपने आप ठीक होती चली जाएगी, क्योंकि सही दिशा में यात्रा करने वाला यात्री प्रति पग अपने गन्तव्य के निकट पहुँच जाता है, आप प्रत्येक कार्य को करने में सक्षम हो सकते हैं, वशर्ते आप योजनाबद्ध तरीके से अपने पथ पर अग्रसर हों।

यदि आप कभी यह अनुभव करें कि आपकी दिशा गलत है यानी आप गलत रास्ते पर जा रहे हैं तो आपको चाहिए कि आप तत्काल आगे बढ़ना बंद कर दें और अपनी दिशा में आवश्यक सुधार एवं परिवर्तन कर दें, सुधार करने का अवसर सदैव विद्यमान रहता है, प्रत्येक पड़ाव पर गलत ट्रेन से उतरकर सही ट्रेन में बैठा जा सकता है। यात्रा संबंधी पूर्व जानकारी होने पर यह नौबत नहीं आती है।

जिंदगी में अगर इसे आत्मसात कर लिया जाय तो जीवन जैसी एक लंबी यात्रा में लक्ष्य को प्राप्त करना अति सुगम हो जाता है।



हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है ।
: महात्मा गांधी

ऑडिट दिवस 2022 की झलकियां



श्री राज कुमार अग्रवाल, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वारा सुश्री मृणालिनी अखौरी, गजल गायिका का अभिनंदन



श्री यू.एस. प्रसाद, महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात), रांची द्वारा सुश्री चुमकी राय (गायिका) का अभिनंदन



श्री अरुण मिंज, वरीय उपमहालेखाकार द्वारा विशिष्ट अतिथि का अभिनंदन



श्री मनोज एक्का, निदेशक, महानिदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात) का कार्यालय द्वारा अतिथि महोदय का अभिनंदन

ऑडिट दिवस 2022 के दौरान ऑडिट रन की कुछ झलकियां



खामोश मन



स्वराज श्वेता
C/o गीतांजलि कुमारी
लेखाकार

मन के आँगन में, उठा हवा का वो शीतल झोंका,
हर दिल में एक बार तूफां लाया तो होगा....

कहीं न ठहरने वाली वो राहें,
कभी न झुकने वाली वो निगाहें,
डूबकर किसी के आंखों के समंदर में
अपना साहिल पाया तो होगा....

तितलियों की आवाज़ ने, कोयल की मीठी साज़ ने॥
फूलों की मुस्कान ने, भँवरों के अंदाज ने
हर होठों पर एक बार खिलखिलाया तो होगा....

बहती हवाओं की खुशबू से अंजान,
बरसती बूंदों सी बेतान,
चांदनी बरसती रातों में, खुली आसमान की बाहो में,
बेफ्रिक मन, कभी रात में खामोशी से गाया तो होगा....॥

हर वक्त शोर में डूबने वाला,
माहौल में मुस्कुराहट घोलने वाला,
ओढ़कर खामोशी की चादर,
अंदर ही अंदर खुद को जलता पाया तो होगा....

भाषा के अभाव में पला-बढ़ा,
वो ना समझ मंद-बुद्धि-सा
किसी की तारीफ में, कविता और गजलों से,
मुस्कुराते हुए, उलझें मन को बहलाया तो होगा....



संसार



प्रखर जैन
c/o प्रतीक जैन
स.ले.अ.

प्रीति रहेगी, प्यार रहेगा, जीवन का विस्तार रहेगा,
हम सब कुछ दिन बाद न होंगे, लेकिन ये संसार रहेगा।

सन्नाटे से शोर उठेगा, शोर से पुनः सन्नाटा होगा,
मंदी होगी, तेजी होगी, लाभ रहेगा, घाटा होगा।
सारे सौदागर मर जाएँगे, फिर भी ये बाज़ार रहेगा,
हम सब कुछ दिन बाद न होंगे, लेकिन ये संसार रहेगा।

स्वप्न यही होंगे नयनों में, लेकिन नयन बदल जाएँगे,
अर्थ यही होंगे बातों के, लेकिन कथन बदल जाएँगे।
आज हमारे मन में जो हैं यह ही शेष विचार रहेगा,
हम सब कुछ दिन बाद न होंगे, लेकिन ये संसार रहेगा।

हर त्रेता में कलयुग होगा, हर कलयुग में त्रेता होगा,
हर युग में एक श्रवण रहेगा, हर युग में नचिकेता होगा।
उत्तर भी बहुतायत होंगे, प्रश्नों का अंबार रहेगा,
हम सब कुछ दिन बाद न होंगे, लेकिन ये संसार रहेगा।

हम जलकण हैं लहरों में मिल, थोड़ा-बहुत बहल जाएँगे,
सागर ऐसे ही गरजेगा, हम बादल में ढल जाएँगे।
हर पल कुछ लहरें टूटेंगी, पर सागर में ज्वार रहेगा,
हम सब कुछ दिन बाद न होंगे, लेकिन ये संसार रहेगा।



हिन्दी दिवस 2022 की कुछ झलकियां



हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते प्रतिभागी



यथार्थ

मृत्यु सत्य है और शरीर नश्वर,
यह जानते हुए भी अपनों के जाने का दुःख होता है,
किसी के खोने का, किसी के खो जाने का गम होता है।

होनी को कौन टाल सकता है,
ईश्वर की इच्छा के सामने, इंसान बेबस होता है।
जीवन एक संयोग मात्र है, सुख और दुख कर्मवार आते हैं।

जीवन की यह एक सच्ची कहानी है, मृत्यु एक दिन सबको आनी है।
मृत्यु होने के अनेकों कारण है, सबलोगों ने माना है
मृत्यु का अलग-अलग बहाना है।

लेकिन कटु सत्य है कि
मृत्यु होने का एक मात्र कारण जन्म है
जो आया है दुनिया में, निश्चित ही उसे जाना है

बेरंग पड़ी जिदंगी है, रंगों से सजाना है,
कुछ सपने हैं कुछ अपने हैं,
साथ लेकर आगे निरंतर बढ़ते जाना है।



डॉ. शिप्रा शालिनी आईन्द
क.हि.अ.



समय के टुकड़े

यार कहाँ रहते हो, आते हो और समय नहीं देते हो
बिसर गये हो हमें या खुद में सिमट गए हो...

सब्जीवाले से मोल-तौल करता मैं
हाथ में झोली और कुछ रुपये जेब में

तंद्रा लौटी, मेरी मित्र से हँसकर बात हुई
वाजिब सवाल, लेकिन भीतर घर कर चुका था।

सरकारी रूपयों के हिसाब से आय आती मेरी,
लेकिन मेरे समय के हिसाब में पक्का न था।

बहुत मिन्नतों के बाद मिलने पर छुट्टी तो मिली थी,
लेकिन शर्त के साथ थी लौट आनी है पांचवे दिन।

आयकर की फाइलिंग की डेट, मुहाने पर आ गयी थी
बाथरूम का नल पिछले महीने से टप टपा रहा था।

गाँव की समिति, भंग होने की कगार पर थी बिल्कुल
सुधीजनों के सुध न लेने पर चर्चाओं का बाजार गर्म था।

घर में भी आर पार था, पत्नी की त्यौरियां अलग चढ़ी थी,
कब से मायके नहीं गई थी, कौन सुनता है उसकी।



पुरुषोत्तम दास
प्र.ले.अ. ग्रेड - II

मुहल्ले वालों ने तय करवा लिया था, पिछले दफे
कि पूजा है, आओगे तो तंग गलियों को चौड़ा करेंगे।

आखिरी तारीख है, वकील साहब अल्टीमेटम थमा ही रखे थे
बेटी की स्कूल की फीस भरने का भी अंतिम ही मौका था।
माँ की तबियत नासाज थी, पंद्रहियां बीतने भर को था
उलाहना यह भी थी कि वह जिए या मरे मुझे फिक्र नहीं है।

कुछ फर्लांग पर किसान के हवाले बाड़ी मेरी,
सब्जियों की क्या रियाँ लिए बाट जो रही थी मेरी।

मैं टुकड़ों में बांटता समय को करके टुकड़े मेरे,
बैकलॉग की फाइलों से फिर जीवन की चादर बुन रहा था।

हिन्दी आम बोलचाल की 'महाभाषा' है।
: जार्ज ग्रियर्सन



नारी तु महान्



गीतांजलि कुमारी
लेखाकार

तुझे किस साये की तलाश है ?
नारी ! तु खुद में ही महान् है॥

दुर्गा माँ सी ताकत तुझमें,
लक्ष्मी-सा रूप सौंदर्य तेरा।
सरस्वती-सा ज्ञान है तुझमें,
गंगा माँ सा आँचल तेरा।

तुझे किस साये की तलाश है ?
नारी! तु खुद में ही महान् है ॥

सीता बनकर मार्ग दिखाये,
राधा बन तुम प्रेम-निभाये।
मीरा जैसी भक्ति तेरी,
अनुसूईयासी ममता तेरी।

तुझे किस साये की तलाश है ?
नारी! तु खुद में ही महान् है ॥

सानिया, साइना-सा खेल तेरा
मैरी, मीरा, पी.बी. सिंधु,

जाने कितने नाम तेरा।
खेल-खेल में दुनियाँ जीतती,
बड़ों-बड़ों की कर दी छुट्टी।

तुझे किस साये की तलाश है ?
नारी! तु खुद में ही महान् है॥

कल्पना बनकर अंतरिक्ष में उड़ती,
है धरती तेरी, आकाश तेरा।
मलाला जैसी साहस तुझमे,
अटल, अविचल विश्वास तेरा।

तुझे किस साये की तलाश है?
नारी! तु खुद में ही महान् है॥
निर्भिक होकर चलती चल तु,
बिगाड़ सके न काल तेरा।
आँसूओं को रोक ले अपनी,
धरती माँ की ताकत तुझमे,
जगत जननी नाम तेरा।

तुझे किस साये की तलाश है?
नारी! तु खुद में ही महान् है॥



प्रधान महालेखाकार महोदय एवं वरीय उप महालेखाकार महोदय द्वारा पुरस्कार वितरण



हिंदी दिवस 2022 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की एक झलक



मित्रता



प्रतीक जैन
स. ले. अ.

पहले विश्व युद्ध के दौरान, एक सैनिक के भय की सीमा नहीं रही जब उसने देखा उसका बचपन का दोस्त घायल हो गया है। एक ट्रेंच में फंसे हुए, जहाँ सर के ऊपर गोलियों की बौछार हो रही थी, सैनिक ने अपने अफसर से पूछा कि क्या वह उस निषिद्ध क्षेत्र की ट्रेंच में जाकर अपने गिरे हुए साथी को ला सकता है। अफसर ने कहा, “तुम जा सकते हो मगर मुझे नहीं लगता इसका कोई फायदा है। तुम्हारा दोस्त शायद अब तक मर चुका होगा और तुम यँ ही अपनी जान जोखिम में डालोगे।” अफसर की बात नज़रंदाज़ कर, सैनिक फिर भी चल दिया। किस्मत अच्छी थी कि वो अपने दोस्त तक पहुँच गया, उसने उसे कंधे पर उठाया और अपनी फौज की ट्रेंच में ले आया। जैसे ही दोनों ट्रेंच में लुढ़के, अफसर ने घायल सैनिक की ओर देखा और फिर सहानुभूति से उसके दोस्त को कहा। “मैंने कहा था कोई फायदा नहीं है,” अफसर ने कहा, “तुम्हारा दोस्त मर चुका है और तुम बुरी तरह से घायल हो गए हो।” “फायदा था, सर,” सैनिक ने जवाब दिया। “क्या मतलब है; फायदा था?” अफसर ने पूछा, “तुम्हारा दोस्त मर चुका है।” “हाँ, सर।” सैनिक ने जवाब दिया। “मगर फायदा इसलिए था क्योंकि जब मैं उसके पास पहुँचा, वह जिंदा था और मुझे ये सुनने पर संतुष्टि मिली जब उसने कहा, “मैं जानता था दोस्त! तुम आओगे।” जिन्दगी में कई बार, चाहे कोई चीज़ करने लायक हो या नहीं, इसपर निर्भर करता है कि आप उसके लिए क्या नज़रिया अपनाते हैं। अपनी सारी हिम्मत जोड़ कर वो करें जो अपना दिल आपको करने को कहे ताकि जीवन में बाद में दुःख ना रहे कि उस वक्त क्यों नहीं किया। जीवन में हर किसी को सच्चे दोस्तों का साथ मिले। एक सच्चा दोस्त वो होता है जो तब अन्दर आता है, जब बाकि दुनिया निकल चुकी होती है।

आत्म-युद्ध



अमित कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

जिंदगी कहां आसान यहां
हर कोई है परेशान यहां ।

किसी को चुनौतियों ने घेरा है,
साथ में जिम्मेदारियों का डेरा है।
कुछ भी हो डट कर टिके रहो,
होता यहां रात के बाद सवेरा है॥

है आत्मविश्वास की डोर जो,
ये बेशक न कमजोर हो।
बाधा पथ में जो भी हो,
एकत्रित मन को लड़ने दो॥

इन बाधाओं का फतह करो,
फिर सुख का भी क्षण आएगा।
हर कष्ट की तीव्रता कम होगी,
और हृदय जोश से भर जाएगा॥

शक्ति खुद की ढूंढो यहां,
क्योंकि—
जिंदगी कहां आसान यहां
हर कोई है परेशान यहां।



कार्यालय की विभिन्न गतिविधियाँ

1. हिन्दी पखवाड़ा 2022 दिनांक 14.09.2022 से 29.09.2022 तक मनाया गया। इस दौरान हिन्दी के प्रगति के लिए हिन्दी निबंध, हिन्दी तकनीकी शब्दावली, हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन आदि की प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई तथा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गए।

इस वर्ष हिन्दी पखवाड़ा का शुभारंभ भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के प्रत्येक अधीनस्थ कार्यालय द्वारा सम्मिलित रूप से गुजरात में आयोजित किया गया। शुभारंभ समारोह में कार्यालय से दो प्रतिनिधि श्री नीरज कुमार, स.ले.अ. एवं श्री राहुल कुमार, स.ले.अ. ने अपनी भागीदारी निभाई। दिनांक 29.09.2022 को हमारे कार्यालय में इसका सामापन समारोह मनाया गया जिसमें श्री राजकुमार अग्रवाल, प्रधान महालेखाकर महोदय एवं श्री अरूण मिंज, वरीय उप महालेखाकर (प्रशासन) महोदय द्वारा प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर प्रोत्साहित किया गया।

2. हिन्दी कार्यशाला :- हिन्दी कार्यशाला प्रत्येक तिमाही में 'हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन' विषय पर क्रमशः 08.07.22, 30.09.22 एवं 14.12.22 तथा 29.03.2023 को आयोजित की गई, जिसमें कार्यालय के कुल 40 कर्मचारियों ने भाग लिया।
3. मार्च तिमाही 2022 तथा जून तिमाही 2022 में हमारे कार्यालय को शत प्रतिशत हिन्दी में पत्राचार के लिए 'नराकास' राँची (नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति) द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।
4. कार्यालय में प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) राँची, लेखापरीक्षा कार्यालय तथा वाणिज्यिक लेखापरीक्षा कार्यालय के संयुक्त तत्वाधान में आडिट सप्ताह का आयोजन किया गया।
5. प्रधान महालेखाकार के निर्देशानुसार इस कार्यालय में दिनांक 28.06.2023 को एक दिवसीय रक्तदान शिविर लगाया गया, जिसमें कर्मियों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया।



अंडमान भ्रमण



सत्य रंजन कर्मकार

सेवानिवृत्त वरीय लेखा अधिकारी

विगत वर्ष मार्च महीना के प्रथम सप्ताह में हम सपरिवार छुट्टी यात्रा रियायत भ्रमण पर अंडमान द्वीप समुह के लिए निकल पड़े। 2 मार्च 2019 को रांची से कोलकाता के लिए रात 9 बजे एयर इंडिया के जहाज पर सफर करते हुए, रात करीब 10 बजे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस अन्तराष्ट्रीय हवाई अड्डा पहुंचें। दूसरे दिन सुबह 5.45 बजे अंडमान की फ्लाईट थी। रात में खाने के लिए रूयार पोर्ट में रेस्टरूम तथा डोरमेटरी की व्यवस्था थी। रेस्ट रूम के ऑफिस में अंडमान के टिकट के आधार पर, रूम खाली नहीं रहने के कारण, 2 जेन्ट्स डोरमेटरी बेड और दो लेडिज डोरमेटरी बेड 300 रूपया प्रति बेड के दर से उपलब्ध कराया गया। रेस्ट रूम का ऑफिस रिसेप्शन में आइडेनटिटी भेरीफिकेशन के पश्चात् हम लोगों को बेड उपलब्ध करा दिया गया। प्रति व्यक्ति एक बोतल पानी, एक टॉवेल, एक साबुन और एक कम्बल मुहैया किया गया। एक डोरमेटरी में करीब 10 बेड थे। रात भर में 12 बजे तक पुरा बेड भर गया। उसमें से ज्यादातर केरल और तमिलनाडु के पैसेंजर थे। रात को विश्राम करने के पश्चात्, भोर 4 बजे उठकर फ्रेश होने के पश्चात् पुनः समयानुसार हम लोग टाईम पर एयर इंडिया के फ्लाईट पर बैठ गये एवं ससमय फ्लाईट पोर्टब्लेयर के लिए उड़ान भर दिया। कोलकाता से पोर्टब्लेयर का हवाई सफर करीब दो घन्टा का था। प्लेन जब उड़ान पर था तब पहली सुरज का किरण नजर आया। करीब 1.5 घंटा बाद जब नीचे खिड़की से देखे तो खाली नीला समुद्र नजर आ रहा था। तभी प्लेन के एयर होस्टेस के द्वारा एनाउन्स किया गया कि थोड़ा ही देर में प्लेन दामोदर सावरकार अन्तराष्ट्रीय विमान पत्तन में उतरने वाली है। बाहर का तापमान करीब 36°- 37° सेल्सियस था। रांची से होटल ऑनलाईन बुक किया हुआ था। विमान बन्दरगाह से थोड़ी से दूरी पर सेलुलर जेल के नजदीक में होटल था। होटल पहुंचकर, थोड़े देर में फ्रेश होकर बाहर घुमने निकले। उसी दिन खाना खाकर, गाड़ी बुक कर, लोकल घुमने के लिए निकल पड़े। पोर्टब्लेयर शहर के अन्दर बहुत सा म्यूजियम था। म्यूजियम सब दर्शन करने के पश्चात् हम लोग पोर्टब्लेयर से 20-25 कि.मी. दूरी पर समुद्र किनारे स्थित चिड़िया टापु देखने के लिए गये। समुद्र किनारे एवं टापु पर जंगल है। बहुत सारे पेड़, बहुत सारे चिड़िया उस जंगल में देखने को मिला। वन विभाग के ऑफिस में टिकट का नंबर एवं आईडी प्रुफ

का नंबर दिखाने के पश्चात् घुसने दे रहा था। समुद्र में उतरने के लिए प्रतिबंध था, क्योंकि उस पानी में मगरमच्छ रहता था। खाली पानी में सब खड़ा होकर, हाथ पर कंकड़ लेकर और किनारे में फोटो खींच रहा था। उसके बाद हमलोग के लिए रात थोड़ा अधिक हो रहा था लेकिन सेल्युलर जेल का लाईट, खड़े साउंड का प्रेशर कहानी दिमाग में चल रहा था, इसलिए नींद नहीं आ रहा था। रात में देर से नींद आने के चलते सवेरे नींद थोड़ा देर से खुली।

दूसरे दिन सवेरे हमलोग रोस आईलैंड घुमने के लिए निकले। ड्राइवर पोर्टब्लेयर के नजदीक एक जेट में ले गए, जहां से हमलोग स्पीडबोट भाड़ा में लेकर रोस आईलैंड के उद्देश्य से रवाना हुए। बोट का किराया प्रति व्यक्ति 750 रूपए था। एक वोट में सबसे ज्यादा 10 आदमी को बैठाया जाता था। हर व्यक्ति को लाईफ जैकेट पहनने के लिए दिया गया। सब

वोट में बैठने के बाद मोटर वोट रोस आईलैंड के तरफ चलने लगा। पोर्टब्लेयर मेन लैंड से मोटर से आधा घंटा से थोड़ा ज्यादा समय में हमलोग रोस आईलैंड पहुंचे। समुद्र में वोट का आनंद लेते हुए करीब 11 बजे इस आईलैंड का छोटा सा जेट में पहुंचे। इस आइलैंड का वर्तमान नाम नेताजी सुभाष द्वीप था। छोटा सा द्वीप चारों तरफ समुद्र से घिरा हुआ था। बहुत सा पेड़ था, उसमें सब से ज्यादा नारियल पेड़ था। पेड़ से नारियल जमीन पर गिरा हुआ था। लेकिन नारियल उठाना माना था। बहुत सा पेड़ में अनेकों फल देखे। थोड़ा आगे जाने से एक पुराना सा खण्डहर मिला। रोस आईलैंड का पुराना ऑफिस एवं सभागार का खंडहर देखने को मिला। उसके बाद हमलोग द्वीप से एक



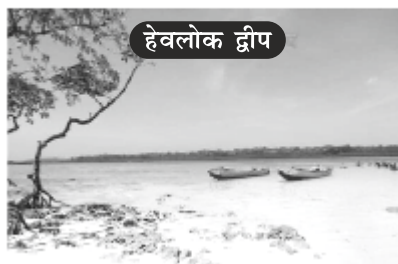
सेल्यूलर जेल



चिड़िया टापू



रोस एवं स्मिथ द्वीप डीलिंगपूर



हेवलोक द्वीप



रोस द्वीप

साइड में समुद्र के तरफ गए। यहां देखे कि पानी साफ है और हलकी लहरें आ रहा है। हमलोग ने घुटना तक

पानी का लुप्त उठाया। उस समुद्र किनारे से थोड़ा दूर में नार्थ वे दिखाई दे रहा था एवं बहुत सा छोटा-बड़ा जहाज पार हो रहा था। जो संभवतः इस द्वीप से दूसरे द्वीप पर जा रहा था। इस द्वीप में एक लाईट हाउस भी था जो जहाज के आवागमन में सहायता करता था। यह आईलैंड डेनिएल रोस के नामानुसार हुआ था। करीब दो घंटा बिताने के बाद हमलोग का स्पीड बोट नार्थवे की ओर चल पड़ा। हमलोग आधा घंटा में नार्थवे में पहुँचे, यहाँ भी एक लाईट हाउस देखे। गार्ड ने बताया 20 रूपया का लाल नोट पर इसी लाइट हाउस का छवि है। नार्थवे में कोरल मिलता है। कोरल देखने के लिए नार्थवे में एक जहाज ले जाता था। एक मेरिन जहाज था जिसमें जहाज के नीचे चेम्बर में चारो तरफ शीशा लगा हुआ था। उसमें से सामने कोरल देखने को मिलता था लेकिन उस जहाज के लिए प्रतिव्यक्ति 1000 रूपए किराया था। नाव वाला हमलोग को कोरल वाला जगह ले गए एवं शीशा से समुद्र के नीचे कोरल को देखे एवं उसके आसपास बहुत मछलियां घुम रही थी। कोरल देखने के बाद फिर बोट हमलोग को नार्थवे में उसी जगह पहुँचा दिया। उसके बाद बोला आपलोग को दो घंटा का टाईम है। स्कूबा डाइविंग कर सकते हैं। चार्ज प्रति व्यक्ति 3000 हजार रूपए था। बहुत आदमी तैयार होकर पानी में उतरा। मेरा एवं मेरे बेटा का बहुत इच्छा था कि नार्थवे में घुमने और फिशिंग करें लेकिन कुछ आदमी के देखे स्कूबा डाइविंग के जगह पहुँचकर तैर रहा है। हमें थोड़ा हिम्मत हुआ। हम तैरना जानते थे इसलिए बेटा-बेटी के साथ पानी में उतर गये। पानी साफ था जूता, शर्ट, पेन्ट खोलकर ड्रेस पहनकर तैरने उतरे। पत्नी किनारे बैठ कर कपड़ा, मोबाईल लेकर समुद्र में तैरने का लुप्त उठा रही थी। समुद्र के बीच में बहुत सा छोटा बड़ा पत्थर था। पत्थर बहुत नुकिला था। पुरी के समुद्र के जैसे बालु रहता है। लेकिन यहाँ नुखिला पत्थर था एवं मेरा पैर थोड़ा कट गया। उस पत्थर से कटने के कारण चलने में बहुत दिक्कत हो रहा था। दो घंटा पार होने के पश्चात् सभी बोट वाले अपने सवारी को बुलाने लगा। हम लोग पानी से निकलकर पेंट-शर्ट पहनकर, गीला कपड़ा को बैग में भर नाव में तैर रहे थे। कुछ देर में हमलोग का बोट पोर्टब्लेयर के लिए नार्थवे से खाना हुआ। करीब पाँच बजे हम लोग पोर्ट ब्लेयर पहुँचे और ज्योंहि वे नाव को लगाया मोटा रस्सी से नाव को बाँधने के पश्चात् एक-एक कर उतारने लगे। नाव पानी के लहर से हिल रहा था। मेरी बेटी जब उतरने लगी उसका हाथ में एक छोटा सा बैग था। उसमें मोबाईल, उसका चश्मा एवं कुछ रूपया था। उतरने के टाईम लहर से हिलने के चलते उसका छोटा सा बैग पानी में गिर गया। नाव वाला जब देखा तुरन्त बैग को समुद्र के पानी से उठा लिया, लेकिन पानी घुसने के चलते मोबाईल खराब हो गया। इस वजह से नार्थवे पोर्टब्लेयर में जितना फोटों खींचे सब बर्बाद हो गया एवं मोबाईल भी खराब हो गया। समुद्री पानी इतना खारा रहता है कि धुप में रखने से भी ठीक नहीं हुआ। नाव वाला कहता है कि हमलोगों का भी इसी तरह हमेशा मोबाईल खराब हो जाता है। मोबाईल खराब होने से थोड़ा मन खराब हुआ, लेकिन इस आईलैंड एवं नाथर्वे घुमने का दृश्य मन के अंदर अभी भी है। जो नहीं भूल सकते हैं। पहले दिन रात को हम लोग सेल्यूलर जेल का लाईट देखे थे। आज दिन में सेल्यूलर जेल देखने के लिए पहुँचे, टिकट लेकर अंदर गये। जेल को ब्रिटिश सरकार ने 1896 में बनवाना प्रारंभ किया था, जो 1906 में पुरा हुआ था। कुल 698 शेल है। प्रति शेल का साईज 3.5'X 7" है प्रति सेल में एक 3"X 1" का भेंटिलेटर है। सेल का हाईट 10 फीट एवं प्रति सेल का सामने एक लोहा का ग्रील है। तीनों के केन्द्र में एक टावर है। इसी टावर से एक सिपाही पुरा सेल्यूलर जेल को देख सकता था। इसी सेल में एक कोने में वीर

दामोदर सावरकर का सेल था। दामोदर सावरकर का बड़ा भाई भी इसी जेल में थे। विगत गोपाल मुखर्जी, पंडित परमानन्द, राम राखा आदि बहुत सा स्वदेशी को इसी सेल्यूलर जेल में काला पानी की सजा के लिए भेजा था। दामोदर सावरकर का कालापानी जेल पिरियड 4.7.1911 से 22.1.1921 तक था। स्व. नेताजी सुभाष चन्द्र बोस 30.11.1943 में उनके दर्शन करने गये थे। अंडमान उस समय काला पानी के नाम से जाना जाता था। इसके समुद्र का पानी नीला रंग का है। उस जमाने में महान स्वाधीनता सेनानी को इस द्वीप में भेजा जाता था ताकि जेल से मैन लैंड में किसी से सम्पर्क साधा नहीं जा सके। तीसरा दिन हमलोग आईलैंड घुमने के लिए निकले पोर्टब्लेयर से जहाज खुलने का टाईम था 7.30 बजे इसीलिए 6.30 बजे सुबह रिपोर्ट करना पड़ा। दिसम्बर 2018 में दो दिन के सफर में प्रधानमंत्री मोदी जी अंडमान भ्रमण में गये। पहले हम लोग सरकारी जहाज में टिकट लेने की कोशिश किए उसका किराया बहुत कम था। एजेन्ट के माध्यम से सभी को आधार कार्ड के बेसिस पर टिकट मिलता था। उसके लिए कम से कम दो दिन पहले सम्पर्क करना पड़ता था। टिकट का दाम के साथ कमिशन देने के पश्चात प्राईवेट जहाज से कम पड़ता था। समय पर एजेन्ट को कागज पत्र नहीं दे पाने के चलते प्राईवेट जहाज में ज्यादा रूपया करीब सरकारी दर से डबल रेट में टिकट खरीदना पड़ा था। जहाज में चढ़ने के लिए सुबह 7 बजे पहुँचे और द्वीप के लिए रवाना हो गये। जहाज थोड़ा दूर चलने के पश्चात् जब बीच समुद्र में पहुँचे तब सब जहाज के डेक में आ पहुँचे। यहाँ नाव, समुद्र, चारों तरफ इतना मनोरम लग रहा था जो भाषा से वर्णन नहीं कर पा रहा हूँ। करीब 3 घंटा बाद हमलोग पहुँचे, पोर्टब्लेयर से उसी जहाज में रिटर्न टिकट कटा हुआ था। रिटर्न का टाईम था 3.30 बजे, पोर्टब्लेयर से हमलोग घुमने के लिए एक सवारी कर लिए थे। पहले वे हमलोग को एक स्कूबा डाइविंग वाले स्थान पर ले गया। बेटा-बेटी इस आईलैंड में स्कूबा डाइविंग के लिए जिद करने लगा। स्कूबा डाइविंग में नाम दाखिल कराने के पश्चात् हमलोगों के अभ्यास करवाने हेतु समुद्र में तथा फार्म में डिटेल बीमारी का जानकारी एवं गार्डियन से 2500 रूपया प्रति व्यक्ति की दर से बिल तैयार किया गया। रेट लिस्ट में प्रति स्कूबा डाइविंग का रेट 3000 रूपया लिखा हुआ था। स्कूबा डाइविंग के ड्रेस पहनने के बाद उसके साथ हमलोग समुद्र पानी में गए। हम बहुत देर तक बेटा-बेटी और बहुत सारे लड़के और लड़कियों को स्कूबा डाइविंग करते हम देखें। बहुत सा लड़का-लड़की को देखे कि समुद्र के पानी में गमछा पहनकर समुद्र का मछली पकड़ रहा था। छोटा बड़ा मछली जाल फेंक कर पकड़ रहा था। छोटा मछली को जाल फेंक के पकड़ कर किनारे कर रहा था। उनलोगों को पुछे कि इतना मछली का क्या करते हैं ? उन्होंने बताया घर में खान के लिए रोज पकड़ लेते हैं। ज्यादा होने से बाजार में बेच देते हैं। तभी एक बंगाली परिवार था जो रिहैविलिएशन में बांग्लादेश से आये थे। वो बोले कि समुद्र का पानी स्वच्छ है। पोर्टब्लेयर का नार्थवे का पानी उतना साफ नहीं था। थोड़ा देर बाद हम शर्ट पेंट खोलकर हॉफपेंट पहन कर पत्नी को कपड़ा देकर नहाने उतर गये जहाँ पर बेटा बेटी लोग स्कूबा डाइविंग कर रहा था। वहाँ पहुँच गये थे। उनलोग के साथ हम भी तैरने का आनन्द उठाया। स्कूबा डाइविंग में सभी मास्क पहने थे इसलिए इनलोगों को समुद्र के अंदर रहकर बहुत देर तक समुद्र तल का पेड़ पौधा एवं विभिन्न प्रकार का मछली देखने को मिला। स्कूबा डाइविंग का एक विडिओ भी उन लोगों ने दिया था। उसक पश्चात् हमलोग समुद्र से निकलकर बीच पे गए। राधानगर बीच एशिया के सबसे अच्छे बीचों में एक बीच है। यहाँ पानी इतना स्वच्छ एवं साफ है जो समुद्र के नीचे का

बालू स्पष्ट दिखाई दे रहा थे। समुद्र का लहर भी बहुत अच्छा था। हम पुरी, दीघा, गोवा एवं मुम्बई में समुद्र देखे एवं समुद्र में नहाए भी लेकिन राधानगर बीच का पानी एवं समुद्र के जैसे लहर हम नहीं देखे। इसी बीच हमलोग पुरा परिवार समुद्र में नहाएं, समुद्र किनारे सब बैग, कपड़ा, मोबाईल रखके समुद्र में नहाए, यहाँ का बीच सेफ था। हमलोग सबसे ज्यादा समय राधानगर बीच में बिताए थे। समुद्र में नहाने के पश्चात् वहाँ अलग से नहाने का बाथरूम था। प्रति व्यक्ति 10 रूपया करके लिया। फ्रेश होकर वहाँ बहुत सा होटल था जिसमें मछली भात मिल रहा था। खाना खाकर फिर गाड़ी से राधानगर बीच से निकल लिए राधा नगर बीच से जो रास्ता था उस रास्ता के चारों तरफ हरा-भरा सुन्दर पेड़ भरा हुआ था। नारियल, आम, सुपारी आदि के पेड़ बहुत हैं। राधानगर बीच में बहुत सारा बड़ा-बड़ा होटल भी हैं। उन सब में होटल जैसे कि अशोका ग्रुप, ताज ग्रुप का होटल भी देखे। उन सब होटल में पहले से बुक करते हुए बहुत परिवार राधानगर बीच में रात्रि का मनोरम दृश्य भी अनुभव किया। ड्राइवर हमलोगों का समय पर जगह पर पहुँचा दिया। वहाँ के बाजार में ताजा नारियल पानी पिया एवं कच्चा आम भी काट कर नमक लगाकर बेच रहा था। मार्च महीने में कच्चा आम देखे तो खरीदे, वहाँ गर्मी ज्यादा है इसलिए मार्च महीने में आम फल जाता है। हम लोग के इधर अप्रैल महीने में कच्चा आम मिलता है। हमलोग सब जहाज में बैठ गए। अभी बहुत कम पैसेंजर था। बहुत टुरिष्ट एक दो दिन खराज द्वीप में रूका। जहाज पोर्टब्लेयर के लिए रवाना हो गया। समुद्र का मनोरम दृश्य शाम का सवेरे से अलग था। अभी सुरज पश्चिम तरफ डुबने लगा। सुरज का डुबने का दृश्य भी अति मनोरम, धीरे-धीरे सुरज समुद्र से दूर दीपों के पीछे छुप गया। करीब शाम 7 बजे पोर्टब्लेयर पहुँचे पोर्टब्लेयर का एक पार्क जो गांधी पार्क नाम से परिचित था, घुमाने ले गये। उसके बाद पोर्टब्लेयर का प्रधान मॉर्केट आविदित मॉर्केट ले गए। यहाँ का हावयार चौक रांची का फिरायालाल चौक जैसे भीड़भाड़ वाला मॉर्केट चौक था। यहाँ कुछ मार्केट में घुमने के पश्चात् रात का खाना खाकर होटल पहुँचे विश्राम के लिए।

चौथे दिन हमलोग का डिल्गपुर का रौस एवं स्मिथ आईलैंड घुमने जाने का प्रोग्राम था। पोर्टब्लेयर से डिल्गपुर के लिए पानी का जहाज प्रतिदिन नहीं चलता। केवल सरकारी जहाज चलता था। जिसका टिकट मिलना मुश्किल एवं टाईम भी ज्यादा लगता था। कुछ सरकारी बस चलता था। उसमें साधारणतः लोकल आदमी सफर करते थे। टुरिष्ट के लिए यह बस आरामदायक एवं सुविधाजनक नहीं था। इसलिए दो दिन के लिए एक प्राइवेट गाड़ी किराया पर लिए। पोर्टब्लेयर से डिल्गपुर की दूरी करीब 185 KM, डिल्गपुर उत्तर अंडमान में आता है। सवेरे 8 बजे हमलोग डिल्गपुर के लिए रवाना हो गये। रास्ता में घना जंगल था अंडमान का नेटीव आदिवासी जहाँ रहते थे। इसलिए उस जंगल को पार करने के लिए वन विभाग से गाड़ी एवं टुरिज्म विभाग का परमिशन लेना पड़ता था। परमिशन लेने के बाद फोरेस्ट डिपार्टमेंट एवं पुलिस का गाड़ी साथ सब टुरिस्ट गाड़ी, बस, ट्रक 9.30 बजे एक लाइन से चलने लगे। सब टुरिस्ट को हिदायत दिया गया कि कोई जंगल में गाड़ी ना रोकें, किसी आदिवासी को पानी तथा खाद्य वस्तु नहीं देना था एवं जंगल में गाड़ी का शीशा बंद करके रखना था। जंगल में कुछ देर जाने के बाद देखे कुछ आदिवासी बच्चा पेड़ के नीचे रोड किनारे खड़ा और पानी एवं बिस्कुट मांग रहा था। थोड़ी दूर पर देखा कि कुछ व्यस्क रास्ता का साईड में खड़ा था एवं पानी दो बोल रहा था। लेकिन ड्राइवर कुछ देने से मना कर दिया। पहले सुने थे, कि आदिवासी खाली बदन रहते हैं एवं पेड़ का छिलका या पन्ना पहन के रहते हैं। लेकिन ज्यादातर आदमी हॉफ पेंट एवं खाली बदन में थे। पुरा काला है। रात को ट्रेन से कोलकाता से रांची लौटे। लॉकडाउन के दौरान घर में रहने के समय पिछले साल का भ्रमण कहानी लिखने का छोटा कोशिश मेरे द्वारा किया गया है।

हिन्दी पखवाड़ा 2022 में विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कार वितरण



वर्ष 2023 फरवरी में कार्यालय में सेवानिवृत्त कर्मियों का
प्रधान महालेखाकार महोदय तथा वरीय उप महालेखाकार एवं उपमहालेखाकार महोदय द्वारा अभिनंदन



रक्तदान - महादान



दिनांक : 28 जुलाई 2023 को प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय में
रक्त दान शिविर लगाया गया ।

जीवन एक युद्ध



अमित कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

क्यों हूँ विचलित मैं द्वंद्व जीवन युद्ध से,
बल-शौर्य से समृद्ध होकर भी।
ज्ञात है धैर्य की परिभाषा मगर,
टूट रहा मनोबल सपने संजोकर भी।

है धरा पर जीवन यहां,
कहीं फूल कहीं कांटे हैं।
मनुष्य ने मनुष्य के खिलाफ,
स्वतः ही द्वेष-पीड़ा बांटे हैं।

आसमां से बरस रहा जल क्षण-क्षण,
धरा पर सबको जीवन देने को।
मनुष्य एक धरा पर रहकर भी,
उतारू है एक दूसरे का जीवन लेने को।

युद्ध यहां अपनों से है,
बदली लगती युद्ध की परिभाषा,
लड़ रहा हूँ मैं अभिमन्यु बनकर,
ना है पराजय का भय, जीत की है पूरी आशा।

जीवन है युद्ध की रणभूमि,
शब्द यहां धनुष बाण है।
हर युद्ध जीतकर पहुंचा हूँ यहां तक,
यही मेरी शौर्य, शोहरत, और शान है।

हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।
: विलियम केरी



घर के तलाश में जिंदगी



अमित कुमार “पुष्पम” (कुमर वाजितपुर, वैशाली)
(द्वारा अमित कुमार-कनिष्ठ हिंदी अनुवादक)

मैं जब भी लड़कों के नियति के बारे में सोचता हूँ तो मैं नीति-निर्माता के नियत से नाराज हो जाता हूँ। लड़को के प्रति समाज में व्याप्त अवधारणा विचारणीय है। अमूमन बड़ा बेटा पिता का प्रिय होता है। छोटा बेटा माँ का प्रिय होता है और अधिकतर जो साधु-संत होते हैं उनमें मझले और सझले अधिक होते हैं। यद्यपि मैं बड़ा बेटा हूँ। फिर भी इन दिनों बेहद पीड़ा में हूँ। क्योंकि, आजकल मैं पटना के गोला रोड, राम जयपाल नगर, आई.ए.एस. कॉलोनी, डी.पी.एस. मोड़ और इसके आस-पास के कुछ क्षेत्रों में खुद के रहने के लिए किराए का घर तलाश रहा हूँ। मैं कई मकान मालिकों से मिला। कइयों का मकान मुझे पसंद भी आया। मगर मेरे अनुरोध को ये कहकर डस्टबिन में डाल दिया गया कि आपको अकेले रहना है इसलिए आपको कमरा नहीं देंगे।

ये अकेला का संप्रत्य काफी उम्दा है। आदमी अकेला इस दुनिया में आता है। अकेला ही इस दुनिया से जाता है। मगर, अकेला रह नहीं सकता है। घर ढूँढने के क्रम में ही एक दार्शनिक मकान मालिक से मुलाकत हुई। मैंने कहा-चाचाजी! मैं किराए का घर ढूँढ रहा हूँ। आपके घर की दीवार पर टू-लेट लिखा हुआ एक कागज चिपका है। इसलिए मैं आपके पास आया हूँ।

चाचाजी घी लगे चपाती को चबाते हुए बोले-क्या करते हो ?

मैंने सकुचाते हुए कहा- शोध छात्र हूँ और आपके कृपा दृष्टि का पात्र हूँ। मगर, शायद! उन्होंने मुझे महापात्र समझ लिया।

तेल में तले हरे मिर्च को दांत से काटते हुए कहा-बेटा किसके हो ? पुत्र किसके को ? लड़का किसके हो ? समांग किसके हो ?

यद्यपि मेरे लिए ये यक्ष प्रश्न था। तथापि मैंने युधिष्ठिर की तरह धैर्य से जवाब दिया। मैंने कहा-बेटा बाप के हैं। पुत्र पिता के हैं। लड़का ससुराल के लिए हैं और समांग समाज के हैं।

“वाह-वाह। हम आपके जवाब से संतुष्ट हुए। हम आपको अपना घर किराए पर देंगे। आप अपने परिवार के साथ आकर रह सकते हैं।”- चाचाजी बोले।

मैंने सकुचाते हुए कहा- मुझे अकेले रहना है।

चाचाजी बिना समय व्यतीत किए हुए बोले- हम अपना घर किसी बैचलर को नहीं देते। मेरे घर में दो लड़की रहती है। आप कहीं और घर ढूँढिए।

यकीन मानिए! मुझे मिर्जापुर का डॉयलॉग याद आ गया। खैर, छोड़िए!

लोगों ने लड़कों के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति विकसित कर ली है। लड़का अकेला रहेगा तो परिवार के लिए और समाज के लिए खतरनाक हो सकता है। अकेला रहेगा तो वो असामान्य व्यवहार कर सकता है।

महाशय, क्या लड़का को सिंग होता है ?

महाशय, हर लड़का सिगरेट नहीं पीता है और कुछ लड़का सिगरेट पीता भी है तो उससे आपको कैंसर नहीं हो जायेगा। और न ही उसके सिगरेट के धुएँ से चोर आनवारी में बंद आयकर अधिकारियों के नजरों से बचाया हुआ आपका महत्वाकांक्षी दस्तावेज काला होगा।

महाशय, कुछ मुझ जैसे टीक-धारी लड़के भी होते हैं। जिनके लाख छटपटाने के बावजूद वो हरियाली से वंचित ही होते हैं।

महोदय,

असामान्य व्यवहार करनेवाला लड़का होगा तो वो किसी भी परिस्थिति में असामान्य व्यवहार ही करेगा। खैर बात को झाँपिए।

इन सभी मुद्दों पर मैंने बहुत चिंतन किया। फिर मेरा ज्ञान चक्षु जागृत हुआ। और मुझे विवाह का महत्व समझ आया। किराए का घर नहीं मिलने का सबसे बड़ा कारण मेरा अविवाहित होना है। क्योंकि, लड़का का अपना अधिकार भी लड़कियों के बलबूते ही मिलता है। उदाहरणार्थ, मैं अपनी बात कहता हूँ।

अभी गांव में जो मेरा घर है। वो तो मेरा अपना घर है। है ना, मगर मैं जब घर जाता हूँ तो मां कभी कहती है दरवाजे पर सो जाओ। तो कभी बरामदे पे। कभी सोफे पर तो कभी बड़ा वाला बक्सा पर।

गुस्सा तो तब आता है कि जब मां बोलती है कि अमित का बियाह कर देंगे न! तो बड़की घर अमित को दे देंगे। असल में उस घर पे मेरा ही अधिकार है। मगर मुझे अपने अधिकार से ये कहकर वंचित किया जा रहा है कि अभी तो अमित अकेला है किसी जगह सो जायेगा।

वही मेरी स्वतंत्रता की अर्थी में तांडव करती हुई जब मेरी पत्नी आएगी और वो मां के चानी पर कनकजरी का चुरा कूटेगी, तो मुझे मेरा अधिकार मिलेगा। तब कहीं किराए का घर भी मिलेगा। फिर मैं भी असमंजस में रहूँगा कि इस अधिकार का अचार बनाऊँ या अमोट। और जो घर रहने के लिए लूँगा। उसी से भागता फिरूँगा।



संयुक्त परिवार के साझी कुटुंब



आयुष कुमार

द्वारा अमित कुमार,
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

घर के यज्ञ में जीजा और फूफा का रूठना सामान्य बात है। जिनके हाव-भाव में एक अलग तरह का एटीट्यूड झलकता है, वो ससुराल पक्ष के प्राणी होते हैं और वो लोग जो घर के किसी कोने में एकांत बैठे होते हैं। इस उम्मीद में समय काट रहे होते हैं कि कोई खाना और चाय को पूछे। वो लोग संयुक्त परिवार के साझी कुटुंब होते हैं। अपने सभी मित्र मंडली में संयुक्त परिवार के साझी कुटुंब होने का गौरव मुझे सर्वाधिक प्राप्त है। कुछेक रिश्तेदार के संयुक्त परिवार में उतना नहीं अखरता है। जैसे-दादी का मायका, बाबा का ससुराल, पिता का मौसा का घर। इन रिश्तेदारी में उतना इसलिए नहीं अखरता है कि आदमी का यहां भावात्मक रूप से उतना जुड़ाव नहीं होता है। आदमी को सर्वाधिक अखरता है तो अपने ननिहाल में। कारण ये कि बचपन में सबसे अधिक मन ननिहाल में ही लगता है। कोई डांटने वाला नहीं होता है। एकछत्र राज होता है।

ननिहाल और ममहर में फर्क होता है। ननिहाल, जहाँ नाना और नानी की चलती है और ममहर में मामा और मामी की।

नाना-नानी आधारित ननिहाल बहुत अच्छा होता है। नाती के इर्द गिर्द ही हर खुशियां घूमती है। ममहर में मामा और मामी का राज हो जाता है। मामी के तेवर वास्तविक दुनिया से परिचय करवाता है। ममहर में जिसका चार-पांच मामा हो उसका तो पूछिये ही नहीं। पांच मामा मतलब रोज पंचायत। वो मामी सोचती है कि उसके यहाँ खा लिया तो दूसरी सोचती है कि तीसरे के यहाँ खा लिया। बेचारा भगिना को हाट के समोसे से काम चलाना होता है। ममहर में कोई यज्ञ हो तो मामी अपने मायके वालों की खातिरदारी में ही लगी रह जाती है। कोई कोई तो भगिना को बुलाता भी नहीं।

इन दिनों मेरी माँ मेरे छोटे भाई को पढ़ने नहीं देती। कहती है, एक बेटा बुरबक भी होना चाहिए; क्योंकि अंत समय में वही बुडबकहा बेटा काम आता है।

मामा बहुत भोले होते हैं और इतने भोले होते हैं कि तय समय के बाद मामी उनको लंगोटी बांधना तक सिखाती है। ये मेरा परिकल्पनात्मक विचार है कि मामी और नानी में अक्सर झगड़ा इसी बात के लिए होता है। ऐसा नहीं है कि मामी को अपनी ननद याद नहीं आती है, मगर तब जब खाना बनाना हो, आंगन लीपना हो और भी बहुत सारे काम करने हो।

अफ़सोस ये है कि बदनाम कंस और शकुनी जैसे मामा ही होते हैं। लोग तो मामी के नाम भी नहीं जान पाते। अगर लोकलज्जा न हो तो मामा और भगिना का रिश्ता ही खत्म हो जाये। कुछ मामी तो ठुमका लगाने वक्त ये भी भूल जाती है कि उसकी ननद के बच्चे कितने हैं।

मामा भी मामी (स्वपत्नी) के प्रति कम श्रद्धालु नहीं होते हैं। रक्षाबंधन में मामा अपनी बहन के घर राखी बंधवाने भले ही न जाएं। मगर, मामी (स्वपत्नी) को लेकर अपने ससुराल जरूर जाते हैं। ताकि मामी अपने भाई को राखी बांध सके।

संयुक्त परिवार के साझी कुटुंब के साथ एक विशेष प्रकार का व्यवहार होता है। बचा हुआ भोजन और साधारण भोजन साझी कुटुंब को मिलता है।

संयुक्त परिवार के साझी कुटुंब को चाय भी बड़ी मुश्किल से पेशल श्रेणी का मिलता है।

पांच प्रकार के चाय होते हैं- स्पेशल, पेशल, चालू, लोकल और रिजर्व।

स्पेशल चाय सिर्फ दुध में चायपती रख के बनाया जाता है। पेशल चाय वैसे दूध का बनता है जिसमें दूधवाला पहले से ही पानी मिलाकर दिया हो और फिर घरवाले उसमें और पानी रख के चाय बनाएं। चालू चाय ट्रेन में मिलती है। अभी इस डब्बे में तो कभी उस डब्बे में। लोकल चाय मेला में मिलता है। आज यहां, कल वहां। और रिजर्व चाय वैसे चाय को कहा जाता है जिसमें जीजा और फूफा बैठ के चाय पी रहे होते हैं। इतने में साझी कुटुंब आ जाता है। घरवाले मुंह पोछने के लिए रसोइया से पूछते हैं- चाय बचा है। रसोइया कहता है- एक कप था। अभी ही झूठा किए हैं। और बना भी देते तो अभी-अभी दूध खत्म हो गया। चीनी और चायपती भी नहीं है।

धन्य हैं ऐसे प्रणम्य मामा, मामी जिंदावाद है।

धन्यवाद प्रभु आपको, हमारा ममहर अपवाद है।



एलोपैथ बनाम आयुर्वेद



हिमांशु पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

एलोपैथ एक चिकित्सा पद्धति है। अच्छी और विकसित पद्धति है। होम्योपैथ और आयुर्वेद भी चिकित्सा की अन्य प्रचलित पद्धतियां हैं। मगर इनमें एलोपैथ को जो सफलता मिली वह हमारे देसी आयुर्वेद को नहीं मिल सकी। कारण है, एलोपैथ के द्वारा प्रचार में किया जाने वाला खर्च। हम हर जगह एलोपैथ के विज्ञापन देखते हैं। और बिना सोचे उसपर भरोसा करते हैं। एलोपैथ भरोसे के लायक है, इसमें कोई शक नहीं, मगर इससे हमारा आयुर्वेद कमतर नहीं पड़ता है।

इसका प्रमाण मेरी बेटी “भावना” हैं। केवल एक साल में जो हुआ वो हमारे लिए किसी चमत्कार से कम नहीं है। वह पिछले साल एलोपैथ के सभी डॉक्टरों के द्वारा अनुपचारित घोषित कर दी गई थी, जिसे स्थानीय भाषा में “जवाब देना” कहते हैं। हम नाउम्मीद हो चुके थे। मगर तभी आयुर्वेद का चमत्कार हमारी खुशियों की प्रतीक्षा कर रहा था। और वह चमत्कार किया वैद्यराज बैद्यनाथ हेंब्रम जी ने। वे स्वयं 100 वर्ष के हैं।

उन्होंने मेरी बेटी के सर पर हाथ रखा, अपनी औषधि दी और कहा, बेटा अंग्रेजी दवाइयां बंद कर दो। यह हमारे परिवार के शॉकिंग बात थी। मगर हम हार चुके थे। इसलिए हमने अक्षरशः उनकी बात मानी, पूरे विश्वास से मानी।

उसे रोजाना फीट्स आते थे। उसने खाना पीना सब छोड़ दिया था। अंग्रेजी दवाइयां अपने अधिकतम मात्रा में दी जा रही थी। जो केवल वजन बढ़ने के साथ ही बढ़ाई जा सकती थी। मगर उसका वजन हर दिन घट रहा था। दवाइयां बेअसर साबित हो चुकी थीं। इन दवाइयों ने 9 साल मेरी बेटी को सम्हाला, मगर अंततः असफल रहे। इन 9 सालों में उसे फायदा तो खास नहीं हुआ, हां उसके लीवर पर साइड इफेक्ट जरूर पड़ा।

हमने जब वैद्य जी का अपनी औषधि के प्रति विश्वास देखा तो हमने सोचा कि हम इन दवाइयों से इसका दिमाग तो बचा नहीं पा रहे हैं, तो बेवजह लीवर भी क्यों खराब कर दें। इसलिए हमने धीरे धीरे 1 महीने में दोनों अंग्रेजी दवाइयां बंद कर दी।

मगर चमत्कार पहले दिन से ही दिखने लगा। फीट्स पहली आयुर्वेदिक खुराक से ही आने बंद हो गए। और केवल 10 दिन के बाद ही उसने रोना शुरू किया। वह पूरे चार सालों के बाद पहली बार रोई। हम माता पिता के आनंद की सीमा नहीं रही।

इस शानदार अनुभव के बाद मैंने करीब पचास मरीजों को उनके पास उपचार हेतु भेजा, जिसमें से करीबन नब्बे प्रतिशत से अधिक ठीक हो चुके हैं। और निरंतर उनके पास मरीजों को भेजने का सिलसिला जारी है।

एलोपैथ के प्रबल प्रचार तंत्र की प्रतिस्पर्धा में आखिर हम कैसे आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का प्रचार कर सकते हैं। शायद ऐसे ही।

जाने का मार्ग निम्नलिखित है:-

1. सड़क मार्ग – रांची से पुरलिया, पुरलिया से बांकुड़ा, बांकुड़ा से विष्णुपुर, विष्णुपुर से दौनी।
2. रेल मार्ग – रांची से विष्णुपुर (पुरलिया खड़गपुर रेल मार्ग) सीधी रेल सेवा, विष्णुपुर स्टेशन से ऑटो रिक्शा।



झारखंड एक नज़र में

राज्य का शासकीय नाम	झारखंड
स्थापना	15 नवंबर 2000
स्थापना दिवस	15 नवंबर
राजधानी	रांची
उप राजधानी	दुमका
उच्च न्यायालय	रांची
राजकीय भाषा	हिन्दी
द्वितीय राजकीय भाषा	उर्दू
अन्य भाषाएँ	संथाली, बंगला, मुंडारी, कुड़ुख हो, नागपुरिया, खोरठा, पंचपरगनिया

राजकीय प्रतीक

राजकीय पशु	हाथी
राजकीय पक्षी	कोयल
राजकीय वृक्ष	साल
राजकीय पुष्प	पलाश
प्रतीक चिन्ह	झारखंड का नया प्रतीक चिन्ह गोलाकार है, जो विकास के प्रतीक का सूचक है

भौगोलिक एवं प्रशासनिक परिचय

भौगोलिक अवस्थिति	भारत के उत्तर-पूर्व भाग में
अक्षांशीय विस्तार	21° 58' से 25° 18' उत्तरी अक्षांश
देशांतरीय विस्तार	83° 22' से 87° 57' उत्तरी अक्षांश
राज्य का ज्यामितीय आकार	चतुर्भुजाकार
भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र में राज्य का भाग	2.42 प्रतिशत
राज्य की लंबाई (उत्तर से दक्षिण)	380 किमी.
राज्य की चौड़ाई (पूर्व से पश्चिम)	463 किमी.
राज्य से सटे राज्यों की संख्या	5 (बिहार, ओड़िसा, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश)
राज्य में जिलों की संख्या	24
बिहार से सटे झारखंड के जिले	10 (साहिबगंज, गोड्डा, दुमका, देवघर, गिरिडीह, कोडरमा, हजारीबाग, चतरा, पलामू, गढ़वा)
उत्तर प्रदेश से सटे झारखंड के जिले	1 (गड़वा)
छत्तीसगढ़ से सटे झारखंड के जिले	4 (गढ़वा, लातेहार, गुमला, सिमडेगा)
ओड़िसा से सटे झारखंड के जिले	4 (सिमडेगा, पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला- खरसावां, रांची, रामगढ़, बोकारो, धनबाद, जमतारा, दुमका, पाकुड़ साहिबगंज)

राज्य का सबसे पश्चिमी जिला	गढ़वा
राज्य का सबसे उत्तरी जिला	साहिबगंज
राज्य का सबसे दक्षिणी जिला	पश्चिमी सिंहभूम
क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य का देश में स्थान	15 वां
प्रमंडलों की संख्या	05 (उत्तरी छोटानागपुर, दक्षिणी छोटानागपुर, संथाल परगना, पलामू, कोल्हान)
सबसे बड़ा प्रमंडल (क्षेत्रफल)	उत्तरी छोटानागपुर
सबसे छोटा प्रमंडल (क्षेत्रफल)	पलामू
सबसे बड़ा जिला (क्षेत्रफल)	पश्चिमी सिंहभूम
सबसे छोटा जिला (क्षेत्रफल)	रामगढ़
राज्य की जलवायु	मानसूनी (उष्ण कटिबंधीय मानसूनी)
औसत वार्षिक वर्षा	140 सेमी.
मुख्य फसल	धान
अधिकतम तापमान	30°C (90°F)
न्यूनतम तापमान	10°C (50°F)
कुल वन भूमि	23,553 वर्ग किमी. (29.55%)
अनुमंडलों की संख्या	43
प्रखंडों की संख्या	260
नगर निगमों की संख्या	5 (रांची, धनबाद, देवघर, चास एवं जमशेदपुर)
जिला परिषदों की संख्या	24
जिला परिषदों के सदस्यों की संख्या	445
पंचायतों की संख्या	4,423
स्थलबद्ध जिलों की संख्या (दूसरे राज्य से सटे नहीं है।)	2 (लोहरदगा, खूंटी)
दो राज्यों से सटे जिलों की संख्या	(5) साहिबगंज, दुमका, (बिहार और पं. बंगाल), सिमडेगा (छत्तीसगढ़ और ओड़िसा), सरायकेला-खरसावां, पूर्वी सिंहभूम (ओड़िसा और पं. बंगाल)
तीन राज्यों से सटे जिलों की संख्या	(1) गढ़वा (बिहार, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़,)
राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लंबाई	3,184 किमी.
प्राथमिक विद्यालयों की संख्या	25,389
माध्यमिक विद्यालयों की संख्या	13,418
उच्च विद्यालयों की संख्या	2,425
महाविद्यालयों की संख्या	123
विश्वविद्यालयों एवं समकक्ष संस्थानों की संख्या	12
चिकित्सा महाविद्यालयों की संख्या	06
केंद्रीय विश्वविद्यालयों की संख्या	01
इंजीनियरिंग महाविद्यालयों की संख्या	04
राज्य में मॉडल स्कूलों की संख्या	11

ऑडिट दिवस 2022 के समापन समारोह की कुछ झलकियां



झारखंड के दर्शनीय स्थल



पहाड़ी मंदिर, राँची



जगन्नाथ मंदिर, धुर्वा



सूर्य मंदिर



बाबा वैद्यनाथ धाम, देवघर



हुन्डरु जलप्रपात



जोन्हा जलप्रपात



रॉक गार्डन, काँके, राँची



दशम फॉल